

इफ्तखार रिशाला : 381

Weekly Booklet : 381

Jannat Ke Bare Me Dilchasp Malumaat (Hindi)

जन्नत

के बारे में

दिलचस्प मा'लूमात

सफ़हात 27

मा'लूमाती सुवाल जवाब

03

जन्नती फल दुन्यावी फलों के मुशाबेह क्यूं ?

09

जन्नतें कितनी हैं ?

16

दुन्या में जन्नत से आई हुई 18 चीजें

27

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी)

أَحْمَدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ط
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

जन्नत के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

दुआए अन्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 27 सफ़हात का रिसाला “जन्नत के बारे में दिलचस्प मा'लूमात” पढ़ या सुन ले उसे मां बाप और खानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आखिरी नबी **اُمِّينَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का पड़ोसी बना । **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

जन्नत का अनोखा फल (दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत)

मुसल्मानों के चौथे खलीफ़ा, मौलाए काएनात हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा **رَضِيَ اللهُ عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि अल्लाह पाक ने जन्नत में एक दरख़्त पैदा फ़रमाया है जिस का फल सेब से बड़ा, अनार से छोटा, मक्खन से नर्म, शहद से भी मीठा और मुस्क से ज़ियादा खुशबूदार है । इस दरख़्त की शाखें तर मोतियों की, तने सोने के और पत्ते ज़बरजद के हैं । इस दरख़्त का फल सिर्फ़ वोही खा सकेगा जो मदीने के ताजदार **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर बहुत ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ेगा ।

(الحاوی للفتاوی، 2/48)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

दो घर

अल्लाह पाक ने इस दुन्या के इलावा दो और अज़ीमुशशान घर पैदा फ़रमाए हैं : एक “ने'मतों वाला घर” है जिसे जन्नत कहते हैं और दूसरा “सज़ा वाला घर” है जिसे दोज़ख़ कहते हैं । अल्लाह पाक ने जन्नत में अपने ईमान वालों के लिये कई तरह की ऐसी ने'मतें जम्अ फ़रमाई हैं जिन्हें न किसी की आंखों

ने देखा, न कानों ने सुना, न किसी आदमी के दिल पर उन का खयाल गुज़रा। जन्नत की ता'रीफ़ में जो मिसालें दी जाती हैं वोह सिर्फ़ समझाने के लिये हैं वरना दुन्या की सब से बेहतरीन शै को जन्नत की किसी चीज़ के साथ कुछ भी मुनासबत (Relevance) नहीं।

जन्नत कितनी बड़ी है ?

जन्नत के तलबगारो ! जन्नत को पैदा करने वाला, हमारा ख़ालिको मालिक कुरआने करीम के पारह 4, **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 133 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ
أَعَدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की तरफ़ दौड़ो जिस की वुस्अत आस्मानों और ज़मीन के बराबर है। वोह परहेज गारों के लिये तय्यार की गई है।

इस आयत की तफ़्सीर में है : गुनाहों से तौबा, **अल्लाह** पाक के फ़राइज़ को अदा कर के, नेकियों पर अ़मल और तमाम आ'माल में इख़्लास पैदा कर के अपने रब की बख़्शिश और जन्नत की तरफ़ जल्दी करो। फिर जन्नत की वुस्अत इस तरह बयान फ़रमाई कि लोग समझ सकें क्यूं कि लोग जो सब से वसीअ (या'नी बड़ी) चीज़ देखते हैं वोह आस्मानो ज़मीन ही हैं, इस से वोह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर तमाम आस्मानों और ज़मीनों को तरतीब से एक लाइन में रख कर जोड़ दिया जाए तो जो वुस्अत बनेगी उस से जन्नत की चौड़ाई का अन्दाज़ा किया जा सकता है कि जन्नत कितनी बड़ी है।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिान, पारह 4, आले इमरान, तहतल आयह : 133, 2/53)

मा'लूमाती सुवाल जवाब

अल्लाह पाक की अता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हिरक्ल बादशाह ने लिखा कि जब जन्नत इतनी बड़ी है कि आस्मान और ज़मीन उस में आ जाएं तो फिर दोज़ख़ कहां है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जवाब में फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللهِ जब दिन आता है तो रात कहां होती है ?

मुफ़स्सिरे कुरआन हज़रते अल्लामा नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ लिखते हैं : इस फ़सीहो बलीग़ गुफ़्तगू के मा'ना बहुत बारीक हैं, ज़ाहिरी तौर पर मा'ना यह है कि दौरए फ़लकी (या'नी आस्मान के गिर्द) से एक जानिब में दिन हासिल होता है तो इस के दूसरी जानिब में शब होती है। इसी तरह जन्नत जानिबे बाला (या'नी ऊंची तरफ़) में है और दोज़ख़ नीचे की तरफ़। मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से यहूदियों ने यह सुवाल किया तो आप ने भी येही जवाब दिया था, इस पर उन्होंने ने अर्ज़ की : तौरैत में भी इसी तरह समझाया गया है। मतलब यह है कि अल्लाह पाक की कुदरतो इख़्तियार से कुछ बईद (या'नी दूर) नहीं जिस शै को जहां चाहे रखे, यह इन्सान की तंगिये नज़र है कि किसी चीज़ के बड़े होने से हैरान हो कर पूछने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहां समाएगी ? (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 4, आले इमरान, तहत्तल आयह : 131 स. 120)

गदा भी मुन्तज़िर है खुल्द में नेकों की दा'वत का

ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

(हदाइके बख़्शिश, स. 37)

शर्हें कलामे रज़ा : अल्लाह पाक की बारगाह में इमामे अहले सुन्नत आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ जन्नत की अज़ीम ने'मतों का ज़िक्र करते हुए अर्ज़ करते हैं : **या अल्लाह पाक!** जन्नत में नेक बन्दों को कई ने'मतों और दा'वतों से

नवाज़ा जाएगा, मैं भी उस दा'वत का इन्तिज़ार कर रहा हूँ। तेरे फ़ज़्लो करम से ख़ैर से वोह वक़्त आए जब हम “जन्नती ने'मतों” से लुत्फ़ अन्दोज़ हों।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

जन्नत कहां है ?

जन्नत कहां है ? इस बारे में उलमाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ के मुख़्तलिफ़ इर्शादात हैं अलबत्ता ज़ियादा सहीह बात येह है कि जन्नत सातवें आस्मान के ऊपर है क्यूं कि कुरआने करीम में है : ﴿عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ﴿١٥﴾ عِنْدَ حَاجِّةِ الْمَأْوَى ﴿١٦﴾﴾ (پ 27، النّهم: 14، 15) तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : “सिद्रतुल मुन्तहा के पास, उस के पास जन्नतुल मावा है।” एक हदीस में है कि जन्नत की छत रहमान का अर्श है।

(فردوس الاخبار، 1/449، حدیث: 3344)

सहाबिये रसूल हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से पूछा गया कि जन्नत आस्मान में है या ज़मीन में ? फ़रमाया : कौन सी ज़मीन और कौन सा आस्मान ऐसा है जिस में जन्नत समा सके ? अर्ज़ किया गया : फिर कहां है ? फ़रमाया : आस्मानों के ऊपर और अर्श के नीचे।

(تفسیر خازن، پ 4، ال عمران، تحت الآية: 133، 1/301)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जन्नत निहायत अज़ीमुश्शान जगह है, अल्लाह पाक की रिज़ा और उस के दीदार का मक़ाम है। कुरआने करीम में जन्नत की अज़मतो शान को कई बार बयान किया गया है। अल्लाह पाक अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके हमें जन्नतुल फिरदौस में अपने प्यारे हबीब صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोस नसीब फ़रमाए।

बिला हिसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब पड़ोस खुल्द में सरवर का हो अता या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

जन्नत कितनी बड़ी है ?

जन्नत की अज़मत की भी क्या ही बात है। जन्नत कितनी बड़ी है। यह अल्लाह पाक और उस के बताने से उस का रसूल (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ही जानते हैं। खुलासा यह है कि जन्नत में 100 दरजे हैं, हर दो दरजों में इतना फ़ासिला है जितना आस्मान और ज़मीन के दरमियान है। “तिरमिज़ी शरीफ़” की हदीसे पाक में है कि : अगर तमाम अलम एक दरजे में जम्अ हों तो सब के लिये वसीअ है।

(ترمذی، 4/239، حدیث: 2540)

जन्नत की ख़ूब सूरती

इन्सान दुन्या में ख़ूब सूरत मन्ज़र देख कर बे साख़्ता बोल उठता है कि जन्नत जैसा मन्ज़र है या'नी एक आम इन्सान के ज़ेहन में भी जन्नत का नक़शा हसीनो जमील है। लेकिन याद रखिये ! दुन्या के सारे ख़ूब सूरत मनाज़िर जन्नत के सामने कुछ हैसियत नहीं रखते क्यूं कि जन्नत इतनी ख़ूब सूरत है कि अगर जन्नत की नाखुन भर चीज़ दुन्या में ज़ाहिर हो तो तमाम आस्मान और ज़मीन उस से आरास्ता हो जाएं और अगर जन्नती का कंगन ज़ाहिर हो तो आफ़ताब की रोशनी मिटा दे, जैसे आफ़ताब सितारों की रोशनी मिटा देता है।

(ترمذی، 4/241، حدیث: 2547 مفهوماً)

जन्नत में दाख़िल होने का बयान

जन्नत के दरवाज़े इतने चौड़े होंगे कि एक बाजू से दूसरे तक तेज़ घोड़े की सत्तर बरस की राह होगी (या'नी एक तेज़ रफ़्तार घोड़ा सत्तर साल तक दौड़ता रहे, इतने बड़े दरवाज़े होंगे)। (مسند امام احمد، 5/475، حدیث: 16206 ملقطاً)। फिर भी जन्नत में जाने वालों की इतनी ज़ियादा ता'दाद होगी कि कन्धे से कन्धा छिलता होगा बल्कि भीड़ की वजह से दरवाज़ा चरचराने लगेगा। (बहारे शरीअत, 1/154, हिस्सा : 1) पहला गुरौह जो जन्नत में जाएगा, उन के चेहरे ऐसे रोशन होंगे जैसे चौदहवीं रात का चांद और दूसरा गुरौह जैसे कोई निहायत रोशन सितारा, जन्नती

सब एक दिल होंगे, उन के आपस में कोई इख़्तिलाफ़ व बुग़ज़ न होगा।

(बहारे शरीअत, 1/157, हिस्सा : 1)

जन्नत में दरख़्त कैसे होंगे ?

सह़ाबिये रसूल हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने एक छोटी सी लकड़ी उठा कर फ़रमाया : अगर जन्नत में तुम इतनी लकड़ी भी तलाश करोगे तो तुम्हें नज़र नहीं आएगी। अर्ज़ की गई : फिर खजूर के और दीगर दरख़्त कहां होंगे ? फ़रमाया : उन की जड़ें मोती और सोने की होंगी और ऊपरी हिस्से में फल होंगे। जन्नत में एक दरख़्त है जिस के साए में सो (100) बरस तक तेज़ घोड़े पर सुवार चलता रहे फिर भी साया ख़त्म न हो।

(अल बुदूरुस्साफ़िरह (उर्दू), स. 654, 367, البدر والسافرة، ص)

जन्नती महल और उन के दरो दीवार

जन्नत में मुख़्तलिफ़ किस्म के जवाहिर (या'नी कीमती पथथरों) के ऐसे साफ़ो शफ़फ़ाफ़ महल हैं जिन का अन्दर का हिस्सा बाहर से और बाहर का अन्दर से दिखाई देता है। जन्नत की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं, एक ईंट सोने की, एक चांदी की, ज़मीन ज़ा'फ़रान की, कंकरियों की जगह मोती और याकूत (हैं)। और एक रिवायत में है कि जन्नते अदन की एक ईंट सफ़ेद मोती की है, एक याकूते सुर्ख़ की, एक ज़बरजद सबज़ की, और मुश्क का गारा है और घास की जगह ज़ा'फ़रान है, मोती की कंकरियां, अम्बर की मिट्टी, जन्नत में एक एक मोती का ख़ैमा होगा जिस की बुलन्दी साठ मील (होगी)।

(बहारे शरीअत, 1/154, हिस्सा : 1)

इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ जन्नती महल का शौक़ दिलाते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : इस बात पर बड़ा तअज़्जुब है कि

अगर तेरे साथी या पड़ोसी माल या ऊंचे मकान में तुझ से आगे बढ़ जाएं तो तुझे यह बात ना गवार महसूस होती है और तेरा सीना तंग हो जाता है और हसद की वजह से तेरी जिन्दगी मुश्किल हो जाती है जब कि तेरे लिये सब से बेहतर हालत यह है कि तुम जन्नत में अपना ठिकाना बनाओ हालां कि कई ऐसे लोग हैं जो जन्नत में नेकियों के ज़रीए तुम से आगे बढ़ने वाले हैं और दुनिया अपने तमाम मालो अस्बाब के साथ भी उन के बराबर नहीं हो सकती ।

(302/5, احیاء العلوم, एहयाउल उलूम (उर्दू), 5/744)

सफ़े मातम उठे ख़ाली हो जिन्दां टूटें ज़न्जीरें गुनहगारो चलो मौला ने दर खोला है जन्नत का
(हदाइके बख़्शिश, स. 38)

शर्ह कलामे रज़ा : इमामे इश्को महब्बत, आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ क्रियामत के दिन नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत के पुरकैफ़ मन्ज़र का तसव्वुर कर के बयान करते हैं : **अल्लाह** पाक की इजाज़तो रहमत से जब हमारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गुनहगारों की शफ़ाअत फ़रमाएंगे और जहन्नम में जाने वालों को शफ़ाअते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़ैरात मिलेगी, फिर क्रियामत का मन्ज़र यूं होगा कि हिसाबो किताब में परेशान हाल उठेंगे, जहन्नम की सज़ा से रिहाई मिलेगी और आवाज़ आएगी : गुनहगारो ! चलो चलो जन्नत की तरफ़ चलो, **अल्लाह** पाक ने तुम्हारे लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

जन्नती मशरूबात

दुनिया का लज़ीज़ से लज़ीज़ शरबत और ज्यूस जन्नती मशरूबात पर कुरबान क्यूं कि दुनियावी शरबत और ज्यूस का मज़ा मुंह में थोड़ी देर तक रहता है

जब कि जन्नत में चार दरिया हैं, एक पानी का, दूसरा दूध का, तीसरा शहद का और चौथा शराब का, फिर इन से नहरें निकल कर हर जन्नती के मकान में जारी होती हैं, वहां की नहरों की शान यह है कि वोह ज़मीन खोद कर नहीं बहती बल्कि ज़मीन के ऊपर चलती हैं, नहरों का एक किनारा मोती का, दूसरा याकूत का और नहरों की ज़मीन ख़ालिस मुश्क की, वहां की शराब दुन्या की सी नहीं जिस में बदबू, कड़वाहट और नशा होता है और पीने वाले बे अक्ल, आपे से बाहर हो कर बेहूदा बकते हैं, वोह पाक शराब इन सब बातों से पाको मुनज़्ज़ह है। (बहारे शरीअत, 1/155, हिस्सा : 1) **अल्लाह** पाक कुरआने करीम के पारह 30 **सूरतुल मुतफ़िफ़ीन** की आयत नम्बर 25 ता 28 में इर्शाद फ़रमाता है :

يُسْقَوْنَ مِنْ رَاحِقٍ مُّثْوَمٍ ۗ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٥﴾
وَمَزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ۗ عَيْنًا يُشْرَبُ بِهَا الْمَعْرِرُونَ ﴿٢٦﴾

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन्हें साफ़ सुथरी ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी जिस पर मोहर लगाई हुई होगी। उस की मोहर मुश्क (की) है और ललचाने वालों को तो इसी पर ललचाना चाहिये। और उस की मिलावट तस्नीम से है। एक चश्मा जिस से मुकर्रब बन्दे पियेंगे।

“तफ़सीरे सिरातुल जिनान” में इन आयात की तफ़सीर कुछ इस तरह बयान की गई है : जन्नत में उन्हें साफ़ सुथरी ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी जिस के बरतनों पर मोहर लगाई हुई होगी और अबरार ही उन की मोहर तोड़ेंगे, उन बरतनों पर लगी मोहर मुश्क की बनी हुई है और ललचाने वालों को **अल्लाह** पाक की इत्ताअत की तरफ़ सब्कत कर के और बुराइयों से बाज़ रह कर, इसी पर ललचाना चाहिये ता कि उन्हें मुश्क की मोहर लगी येह शराब हासिल हो और उस शराब में

तस्नीम मिली हुई है जो कि जन्नत की शराबों में सब से आ'ला है और तस्नीम शराब का वोह चश्मा है जिस से सिर्फ अल्लाह पाक के मुर्करब बन्दे पियेंगे और बाकी जन्नतियों की शराबों में शराबे तस्नीम के चन्द क़तरे मिलाए जाएंगे ।
(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 30, अल मुतफ़्फ़ि़न, तहतल आयह : 25 ता 28, 10/580)

जन्नती शराब किस के लिये

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : जो येह पसन्द करता है कि अल्लाह पाक उसे आख़िरत में शराब पिलाए तो वोह उसे दुन्या में छोड़ दे ।
(मुत्तम औसुत, 6/312, حدیث: 8879)

चश्मे तर और क़ल्बे मुज़्तर दे अपनी उल्फ़त की मैं पिला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 79)

जन्नती खाने

मुख़्तलिफ़ मुल्कों और शहरों में खाने का Taste (या'नी ज़ाइक़ा) चेक करने के लिये जाने वालों को जन्नती खानों का शौक़ रखना चाहिये । अल्लाह पाक ने जन्नतियों के खानों का ज़िक़र कुरआने करीम में फ़रमाया है कि फल, मेवे, मोटे मोटे परिन्दे, मन्न व सल्वा, शहद, दूध और बे शुमार किस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ खाने मिलेंगे, वोह जो चाहेंगे फ़ौरन उन के सामने मौजूद होगा अगर किसी परिन्दे को देख कर उस का गोशत खाने को दिल करेगा तो उसी वक़्त वोह परिन्दा भुना हुवा उन के पास आ जाएगा अगर पानी वगैरा की ख़्वाहिश हो तो पियाले खुद हाथ में आ जाएंगे, उन में ठीक अन्दाज़े के मुताबिक़ पानी, दूध, शराब, शहद होगा कि उन की ख़्वाहिश से एक क़तरा कम न ज़ियादा, पीने के बा'द जहां से आए थे खुद ब खुद वहां चले जाएंगे । (बहारे शरीअत, 1/155, हिस्सा : 1)

जन्नती फल दुन्यावी फलों के मुशाबेह क्यूं ?

कुरआने करीम में जन्नती फलों के बारे में वज़ाहत इर्शाद फ़रमाई गई है

कि वोह फल दुन्यावी फलों से मिलते जुलते होंगे क्यूं कि जन्नती दुन्यावी फलों से मानूस थे लेकिन उन का जाएका दुन्या के फलों से बहुत आ'ला होगा। पारह 1 सूरतुल बकरह, आयत नम्बर 25 में इर्शाद होता है :

كُلَّمَا رَزَقُوا مِنْهَا مِنْ شَمْرَةٍ رَرُّوا قَالُوا هَذَا الَّذِي رَزَقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأَنْتُمْ بِهٖ مُتَشَابِهَاتٌ

तरजमए कन्जुल इरफ़ान : जब उन्हें उन बागों से कोई फल खाने को दिया

जाएगा तो कहेंगे, येह तो वोही रिज़क है जो हमें पहले दिया गया था हालां कि उन्हें मिलता जुलता फल (पहले) दिया गया था।

जन्नत में निज़ामे इन्हिज़ाम

जन्नत में नजासत, गन्दगी, थूक, बदन का मैल बिल्कुल न होंगे, एक खुशबूदार आराम देह डकार आएगी, खुशबूदार आराम देह पसीना निकलेगा, सब खाना हज़्म हो जाएगा, डकार और पसीने से मुश्क की खुशबू निकलेगी।

(मुस्लम, स 1165, हदीथ: 7152/لخصاً)

जन्नतियों की ख़िदमत

कम से कम हर जन्नती के सिरहाने दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे, ख़ादिमों में हर एक के एक हाथ में चांदी का, दूसरे हाथ में सोने का पियाला होगा और हर पियाले में अलग अलग रंग की ने'मत होगी, जितना खाता जाएगा लज़्ज़त कम न होगी बल्कि बढ़ेगी, हर निवाले में सत्तर (70) मजे और हर मजा दूसरे से अलग होगा और वोह मजे एक साथ महसूस होंगे, एक मजे का एहसास दूसरे मजे में फ़र्क नहीं डालेगा। (बहारे शरीअत, 1/157, हिस्सा : 1 मुलख़बसन)

गदा भी मुन्तज़िर है खुल्द में नेकों की दा'वत का खुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

(हदाइके बख़्शाश, स. 37)

जन्नतियों की शानो शौकत

उम्दा और कीमती लिबास पहनने का शौक रखने वालो ! अगर जन्नत का कपड़ा दुन्या में पहना जाए तो जो देखे बेहोश हो जाए और लोगों की निगाहें उस को बरदाश्त न कर सकें। (बहारे शरीअत, 1/158, हिस्सा : 1) जन्नतियों के लिबास पुराने नहीं होंगे। (बहारे शरीअत, 1/157, हिस्सा : 1) जन्नतियों के सर, पल्कों और भवों के सिवा बदन पर कहीं बाल न होंगे, सब बे रीश होंगे, सुर्मा लगी आंखें, तीस बरस की उम्र के मा'लूम होंगे, (مسند امام احمد، 3/393، حدیث: 9386) कभी इस से ज़ियादा मा'लूम न होंगे। (ترمذی، 4/254، حدیث: 2571) जन्नतियों की जवानी कभी खत्म न होगी। (बहारे शरीअत, 1/159, हिस्सा : 1) नित नए फेशन अपना कर लोगों को अच्छा नज़र आने वालों को जन्नत में ले जाने वाले आ'माल की कोशिश करनी चाहिये।

जन्नती हूरों का हुस्नो जमाल

घ्यारे घ्यारे इस्लामी भाइयो ! हूर (या'नी जन्नती औरत) अगर ज़मीन की तरफ़ झांके तो ज़मीन से आस्मान तक रोशन हो जाए और खुशबू से भर जाए और चांद सूरज की रोशनी चली जाए और उस का दोपट्टा दुन्या व माफ़ेहा (या'नी दुन्या और जो कुछ दुन्या में है इस) से बेहतर है। (بخاری، 4/264، حدیث: 6568) हर जन्नती को हूरे ईन (या'नी बड़ी आंखों वाली जन्नती औरतों) में से कम से कम दो बीबियां ऐसी मिलेंगी कि सत्तर सत्तर जोड़े पहने होंगी फिर भी उन लिबासों और गोश्त के बाहर से उन की पिंडलियों का मग़ज़ ऐसे दिखाई देगा जैसे सफ़ेद शीशे में शराबे सुर्ख़ दिखाई देती है और यह इस वजह से कि **अल्लाह** पाक ने उन्हें याकूत की तरह फ़रमाया, याकूत में सूराख़ कर के अगर डोरा डाला जाए तो ज़रूर बाहर से दिखाई देगा। आदमी अपने चेहरे को उस के रुख़सार में आईने से भी ज़ियादा साफ़ देखेगा और उस हूर पर अदना दरजे का जो मोती होगा वोह ऐसा होगा कि मशरिक़ से मगरिब तक रोशन कर दे। (बहारे शरीअत, 1/157, हिस्सा : 1)

जब कोई बन्दा जन्नत में जाएगा तो उस के सिरहाने और पाउं की जानिब दो हूरें इतनी अच्छी आवाज़ से अल्लाह पाक की ता'रीफ़ और पाकी बयान करेंगी कि मख़्लूक ने कभी इतनी प्यारी आवाज़ नहीं सुनी होगी ।

(मूम्म क़ैर 8/95, حدیث: 7478)

सब से ज़ियादा हूरें किस के लिये ?

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर उठते बैठते, चलते फिरते हर वक़्त दुरूदे पाक पढ़ते रहिये कि फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “जन्नत में सब से ज़ियादा हूरें उस शख़्स को मिलेंगी जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद पढ़ने वाला होगा ।” (أفضل الصلوات للنبياني، ص 25)

क्यूं न ज़ेबा हो तुझे ताजवरी तेरे ही दम की है सब जल्वा गरी

मलको जिन्नो बशर हूरो परी जान सब तुझ पे फ़िदा करते हैं

(हदाइके बख़्शिश, स. 114)

शर्ह क़लामे रज़ा : आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ बारगाहे रिसालत में अर्ज़ करते हैं : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! अल्लाह पाक की अ़ता से दुन्या व आख़िरत की बादशाही आप ही को लाइक़ है क्यूं कि दुन्या व आख़िरत की सारी बहारें, ने'मतें आप ही के दम क़दम से हैं, आप दुन्या में तशरीफ़ न लाते तो अल्लाह पाक इस दुन्या को पैदा न फ़रमाता, ख़ालिके कौनैन की अ़ता से आप मालिके कौनैन हैं । फ़िरिशते, जिन्न, इन्सान, हूर और परी सब आप पर कुरबान होते हैं ।

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो

जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है

(हदाइके बख़्शिश, स. 178)

जन्नतियों की सुवारियां और खुद्दाम

जन्नत में दाखिले की ख्वाहिश रखने वालो ! जन्नती आपस में मिलना चाहेंगे तो एक का तख़्त दूसरे के पास उड़ कर चला जाएगा । और एक रिवायत में है कि उन के पास निहायत आ'ला दरजे की सुवारियां और घोड़े लाए जाएंगे वोह उन पर सुवार हो कर जहां चाहेंगे जाएंगे । (115: حدیث: 304/4، الترغیب والترہیب)

जन्नतियों को मिलने वाली ने'मतों का बयान

मर्तबे और दरजे के ए'तिबार से सब से छोटे जन्नती के लिये अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर (72) बीवियां होंगी और उन को ऐसे ताज मिलेंगे कि जिन का सब से छोटा मोती मशरिफ़ो मगरिब के दरमियान रोशन कर दे । (2571: حدیث: 254/4، ترمذی) और अगर मुसल्मान औलाद की ख्वाहिश करे तो उस का हुम्ल और वज़़अ (या'नी बच्चे का पैदा होना) और पूरी उम्र (या'नी तीस साल की), ख्वाहिश करते ही एक लम्हे में हो जाएगी । (2572: حدیث: 254/4، ترمذی)

जन्नत में रात और दिन नहीं होगा

जन्नत की ज़िन्दगी बहुत प्यारी और हमेशा रहने वाली है, इसी वजह से जन्नत में नींद नहीं कि नींद एक किस्म की मौत है और जन्नत में मौत नहीं । हज़रते जुहैर बिन मुहम्मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرमाते हैं : जन्नत में न रात है और न ही सूरज और चांद, जन्नती हमेशा नूर में रहेंगे, उन के लिये रात और दिन की मिक्दार होगी, रात की पहचान उन्हें पर्दे लटकाए जाने और दरवाज़े बन्द किये जाने से होगी जब कि दिन की पहचान पर्दे हटाए जाने और दरवाज़े खोले जाने से होगी ।

(البدور السافرة، ص 667, 375، ابدور السافرة)

अल्लाह पाक की बारगाह में शहज़ादए आ'ला हज़रत मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अर्ज़ करते हैं :

दाखिले खुल्द हम को जो फ़रमाए तू हम हों और हूरो गिल्मां लबे आब जू
 और जामे तहूर और मीना सबू देखें आ'दा तो रह जाएं पी कर लहू
 अल्लाहू, अल्लाहू, अल्लाहू, अल्लाहू

(सामाने बख़्शिश, स. 23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

जन्नत का मौसिम

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस्क़द رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : जन्नत में मौसिम दरमियाना रहेगा, उस में न गर्मी होगी न सर्दी । (البدور السافرة، ص 512)

जन्नत की सबसे बड़ी ने'मत

हज़रते सईद बिन मुसय्यिब رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से मुलाक़ात हुई तो हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने फ़रमाया : मैं अल्लाह पाक से सुवाल करता हूँ कि वोह मुझे और आप को जन्नत के बाज़ार में इकठ्ठा कर दे । हज़रते सईद रَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने (हैरान हो कर) कहा : क्या जन्नत में बाज़ार भी होगा ? हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने फ़रमाया : हां ! मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ख़बर दी है कि जन्नत वाले जब जन्नत में दाख़िल होंगे तो जन्नत के दरजात में अपने आ'माल के मुताबिक़ दाख़िल होंगे, फिर उन्हें दुन्या के दिनों के हिसाब से एक हफ़्ते में इजाज़त दी जाएगी तो वोह अपने रब की ज़ियारत करेंगे और उन के सामने अल्लाह पाक का अर्श ज़ाहिर होगा और अल्लाह पाक उन पर जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में तजल्ली फ़रमाएगा तो उन के लिये नूर के मिम्बर, मोतियों के मिम्बर, याकूत और ज़बरजद के मिम्बर, सोने और चांदी के मिम्बर रखे जाएंगे, उन में से अदना दरजे वाले जन्नती हालां कि उन में अदना कोई नहीं, मुश्क और काफूर के टीले पर होंगे और वोह येह तसव्वुर न करेंगे कि कुरसियों वाले उन से आ'ला जगह में हैं ।

हज़रते अबू हु़रैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! क्या हम अपने रब को देखेंगे ? इर्शाद फ़रमाया : हां ! क्या तुम सूरज को और चौदहवीं रात में चांद को देखने में शक करते हो ? हम ने अर्ज़ की : नहीं । इर्शाद फ़रमाया : ऐसे ही तुम अपने रब को देखने में शक न करोगे, उस मजलिस में हर एक के सामने अल्लाह पाक बे हिजाब मौजूद होगा हत्ता कि उन में से एक शख्स से इर्शाद फ़रमाएगा : ऐ फुलां के बेटे फुलां ! क्या तुझे वोह दिन याद है जब तूने ऐसा ऐसा कहा था ? अल्लाह पाक उसे उस की बा'ज़ दुन्यवी बद अहदियां याद दिलाएगा तो वोह बन्दा अर्ज़ करेगा : ऐ अल्लाह ! क्या तूने मुझे बख़्शा नहीं दिया ? अल्लाह पाक इर्शाद फ़रमाएगा : हां ! तू मेरी वसीअ़ रहमत की वजह से ही तो अपने इस दरजे में पहुंचा । वोह उसी हालत में होंगे कि उन के ऊपर बादल छा जाएगा और उन पर ऐसी खुशबू बरसाएगा कि उस जैसी खुशबू कभी किसी चीज़ में न पाई होगी, और हमारा रब इर्शाद फ़रमाएगा : उस इन्आमो इकराम की तरफ़ जाओ जो मैं ने तुम्हारे लिये तय्यार किया हुवा है और उस में से जो चाहो ले लो । तब हम उस बाज़ार में पहुंचेंगे जिसे फ़िरिशतों ने घेरा होगा, उस में वोह चीज़ें होंगी जिन की मिस्ल न आंखों ने देखी, न कानों ने सुनी और न दिलों पर उन का खयाल गुज़रा, तब हम जो चाहेंगे वोह हमें दे दिया जाएगा, वहां न तो ख़रीद होगी न फ़रोख़्त, और उस बाज़ार में जन्नती एक दूसरे से मिलेंगे और बुलन्द दरजे वाला खुद आएगा और अपने से नीचे दरजे वाले से मिलेगा हालां कि उन में नीचा कोई नहीं तो इस पर जो लिबास येह देखेगा वोह उसे पसन्द आएगा, अभी उस की आख़िरी बात ख़त्म न होगी कि उसे अपने ऊपर मौजूद लिबास उस से अच्छा महसूस होगा, येह इस लिये होगा कि जन्नत में कोई ग़मगीन न हो, फिर हम अपने घरों की तरफ़ लौटेंगे तो हम से हमारी बीवियां मिलेंगी और कहेंगी : मरहबा, खुश आमदीद ! जिस वक़्त आप यहां से गए थे उस वक़्त के मुकाबले में अब

आप का हुस्नो जमाल बहुत ज़ियादा है। तब हम कहेंगे : आज हमें अपने रब्बे करीम के दरबार में बैठना नसीब हुवा था, (खुदाए) जब्बार के हुजूर हमें हम नशीनी नसीब हुई, हमारा हक़ येही था कि हम ऐसे लौटें जैसे अब लौटे हैं। (2558: حدیث: 246/4, तर्ज़ुम, 4/1)

क्या औरतों को जन्नत में दीदारे इलाही होगा

दीदारे इलाही के बारे में सहीह बात येह है कि (जन्नती मर्द और औरत) दोनों को होगा। (मिरआतुल मनाजीह, 7/517)

अल्लाह पाक की खास इनायत

हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ लिखते हैं : जन्नत की ने'मतों में सब से बड़ी ने'मत येह होगी कि अल्लाह पाक जन्नतियों से राज़ी होगा। कभी उन पर नाराज़ न होगा। महबूब की रिज़ा आशिक़ के लिये बड़ी ने'मत है। ख़याल रहे कि अल्लाह पाक की रिज़ा और अल्लाह पाक का दीदार किसी अमल का बदला न होगा। येह खास अतिथ्यए रब होगा। (नूरुल इरफ़ान, स. 315)

जन्नतें कितनी हैं ?

जन्नतों की ता'दाद आठ है जिन के नाम येह हैं : ① दारुल जलाल ② दारुल क़रार ③ दारुस्सलाम ④ जन्नते अ़दन ⑤ जन्नते मावा ⑥ जन्नते खुल्द ⑦ जन्नतुल फ़िरदौस ⑧ जन्नते नईम। (तफ़ीरुल रूह़ुल बयान, 1/82 ملقطاً)

जन्नत की दुआ

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आखिरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने तीन मरतबा अल्लाह पाक से जन्नत का सुवाल किया तो जन्नत कहती है : ऐ अल्लाह! इस को जन्नत में दाख़िल कर दे और जिस शख़्स ने तीन मरतबा दोज़ख़ से पनाह मांगी तो दोज़ख़ कहती है : ऐ अल्लाह! इस को दोज़ख़ से पनाह में रख। (2581: حدیث: 257/4, तर्ज़ुम, 4/1)

कौन सी जन्नत की दुआ मांगी जाए ?

एक और हृदीसे पाक में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम अल्लाह पाक से सुवाल करो तो “फ़िरदौस” का सुवाल करो ।

(ترمذی، 4/238، حدیث: 2538)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क्या आप जानते हैं ? जन्नतुल फ़िरदौस कौन सी जन्नत है ? हमारे प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ, हज़रते अहले बैत व सहाबाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ जन्नतुल फ़िरदौस में होंगे इसी लिये अमीरे अहले सुन्नत الْعَالِيَةِ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ الْعَالِيَةِ अपने अश्शर और दुआओं में अक्सर जन्नतुल फ़िरदौस मांगते हैं : **اللَّهُمَّ اَدْخِلْنَا جَنَّةَ الْفِرْدَوْسِ بِغَيْرِ حِسَابٍ** ।

मेरी सरकार के कदमों में ही إِنَّ شَاءَ اللهُ मेरा फ़िरदौस में अत्तार ठिकाना होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 185)

हुक़्मे हृदीस पर अमल करने की निय्यत से अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ करते हैं : **या अल्लाह पाक !** ब वसीलए ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हमें बिला हिसाबो किताब जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़री नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोस अता फ़रमा । **या अल्लाह पाक !** हमें बिगैर हिसाब व किताब के जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे और आख़री नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोस नसीब फ़रमा । **या अल्लाह पाक !** हमें जन्नतुल फ़िरदौस में अपने आख़री नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोस अता फ़रमा । **اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ।

हश्त खुल्द आएँ वहां कस्बे लताफ़त को रज़ा चार दिन बरसे जहां अब्बे बहाराने अरब

(हदाइके बख़्शिश, स. 61)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

चलो चलो जन्नत की जानिब चलो

जन्नत के तलबगारो ! अल्लाह पाक ने ईमान वालों के लिये जन्नत में कितनी प्यारी प्यारी और आ'ला ने'मतें पैदा फ़रमाई हैं, **अल्लाह** पाक अपनी रहमत से हमें भी उन ने'मतों से नवाजे और बिला हिसाबो किताब जन्नत में दाख़िला नसीब फ़रमाए । दुन्या में ख़ूब सूरत मनाज़िर देखने के लिये लोग हज़ारों, लाखों रुपै ख़र्च कर के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर जाते हैं बल्कि एक मुल्क से दूसरे मुल्क भी सफ़र इख़्तियार करते हैं । दुन्या के ख़ूब सूरत तरीन मनाज़िर जन्नत की ख़ूब सूरती के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं । काश ! पहाड़ों, मुशिकल रास्तों पर चल कर बल्कि बा'ज़ अ़वक़ात अपनी जान ख़तरे में डाल कर दुन्या की फ़ना हो जाने वाली ख़ूब सूरती देखने के लिये जाने वालों के दिलों में हमेशा रहने वाली जन्नत की ख़ूब सूरती की हिर्स पैदा हो । दुन्या का हसीन से हसीन मन्ज़र देखें तो येह तसव्वुर करें ! जिस रब ने फ़ना हो जाने वाली इस दुन्या को इतना ख़ूब सूरत बनाया है जो देखने के ए'तिबार से उस के फ़रमां बरदार और गुनहगार दोनों के लिये बराबर है तो उस खुदा ने अपनी जन्नत जो सिर्फ़ नेकों और फ़रमां बरदारों के लिये बनाई है वोह कितनी ख़ूब सूरत होगी । वोह भी ऐसी जो कभी ख़त्म न होगी, चन्द मिनट और चन्द लम्हात के लिये नहीं बल्कि उस की रहमत से जन्नत में दाख़िल होने वाले को हमेशा की ज़िन्दगी नसीब होगी । काश ! जन्नत पाने के लिये नेक आ'माल करने का शौक़ पैदा हो । दुन्या की थोड़े दिनों की सैरो तफ़रीह (या'नी Outing) के लिये और ख़ूब सूरत मनाज़िर देखने के लिये मशक्कत बरदाश्त की जा सकती है तो जन्नत के हुसूल के लिये नेकियां करने की कोशिश क्यूं नहीं होती ।

इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जन्नत की हकीक़त और जन्नतियों की ने'मतों, खुशियों का तसव्वुर कर के

गौर करो और उस शख्स की हसरत का अन्दाज़ा करो जिस ने जन्नत के बदले सिर्फ दुनिया पर क़नाअत की और जन्नत से महरूम हो गया।

(احياء العلوم، جلد 5، 303/304)

जन्नत के तलबगारो ! जन्नत को इबादत की मशक्कतों से ढांपा गया है। दुनिया की पचास, साठ साल की मुख़्तसर ज़िन्दगी इबादत में गुज़ार कर हमेशा की ज़िन्दगी राहत और सुकून में गुज़ारिये। नफ़्स पर मशक्कत कर के, इबादतों और रियाज़तों में वक़्त गुज़ार कर सुन्नतों पर अमल कर के, नेकी की दा'वत दे कर, गुनाहों से बच कर बल्कि दूसरों को बचा कर ज़िन्दगी गुज़ारने वाला, **अल्लाह** करीम की रहमत से जन्नत में दाख़िल होगा। यकीनन जन्नत **अल्लाह** पाक की रहमत ही से इनायत होगी, चूँकि जन्नत में दाख़िले के लिये उसी ने हमें नेक आ'माल करने और गुनाहों से बचने का हुक्म फ़रमाया है इस लिये हमें कोशिश करनी चाहिये कि हम उस के फ़रमां बरदार बन्दे बन जाएं। **अल्लाह** पाक अपनी रहमत, अपने करम और अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के सदके हम गुनहगारों को अपने पाकीज़ा घर जन्नत में बिला हिसाबो किताब दाख़िला नसीब फ़रमाए। **اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

यूँ तो हर नेक काम जन्नत में ले जा सकता है, अब चन्द उन नेक आ'माल का बयान किया जाता है जिन पर अमल करने वालों के बारे में अहादीसे मुबारका और रिवायात में जन्नत की खुश ख़बरियां दी गई हैं। **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये इन पर अमल करना जन्नत में दाख़िले का सबब बन सकता है।

﴿1﴾ कलिमाए इस्लाम

मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ عَنْهُ** से

रिवायत है कि नबिय्ये रहमत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जो शख्स “لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ” का यकीन रखते हुए मरा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।

(مسند ابوداود، ص 265، حديث: 1965)

हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : येह इस्लाम का वोह “बुन्यादी कलिमा” है जिस पर इस्लाम की पूरी इमारत काइम है। येह कलिमा बिला शुबा जन्नत में ले जाने वाला अमल बल्कि जन्नत में ले जाने वाले तमाम आ'माले सालिहा (या'नी नेक कामों) की अस्ल व बुन्याद है। हदीस में जहां सिर्फ़ “لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ” जि़क्र किया गया है उस से मुराद पूरा कलिमा या'नी اللهُ سَوَّلَ اللهُ هُا (बिहिश्त की कुन्जियां, स. 33)

﴿2﴾ सुन्नतों पर अमल

सुन्नतों पर अमल न सिर्फ़ जन्नत में दाख़िल होने का सबब है बल्कि सुन्नतों पर अमल करने वाले खुश नसीब आशिक़ाने रसूल जन्नत में प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोस पाएंगे जैसा कि अल्लाह पाक की अ़ता से हम गुनहगारों को जन्नत में ले जाने वाले आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्वत की उस ने मुझ से महब्वत की और जिस ने मुझ से महब्वत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکوٰۃ المصابیح، 1/55، حديث: 175)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

﴿3﴾ जन्नत के आठों दरवाजे खुल जाते हैं

हदीसे पाक में है : जिस ने अच्छी तरह वुजू किया और फिर आस्मान की तरफ़ निगाह उठाई और कलिमाए शहादत पढ़ा उस के लिये जन्नत के आठों दरवाजे खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो।

(दारमी، 1/196، حديث: 716)

«4» मस्जिद बनाइये, जन्नती महल पाइये

अल्लाह पाक की अ़ता से मालिके जन्नत, कासिमे ने'मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जो अल्लाह पाक के लिये एक मस्जिद बनाएगा तो अल्लाह पाक उस के लिये जन्नत में एक घर बना देगा ।
(ابن ماجه، 1/408، حديث: 737)

हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मस्जिद छोटी बनाए या बड़ी, अकेला बनाए या दूसरों के साथ मिल कर अगर निय्यत में इख़लास है तो إِنَّ شَاءَ اللهُ यह ही सवाब (या'नी जन्नत में घर) है ।

(मिरआतुल मनाजीह, 5/183)

«5» नमाज़

ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : अल्लाह पाक इर्शाद फ़रमाता है : “अगर बन्दा वक़्त में नमाज़ क़ाइम रखे तो मेरे बन्दे का मेरे जिम्मए करम पर अहद है कि उसे अज़ाब न दूं और बे हिसाब जन्नत में दाख़िल करूं ।”
(الفروس بماثورا الخطاب، 3/171، حديث: 4455)

पढ़ते रहो नमाज़ तो चेहरे पे नूर है पढ़ता नहीं नमाज़ वोह जन्नत से दूर है

«6» सुन्नते मुअक्कदा

अल्लाह पाक की रहमत भरी जन्नत की चाहत में बेताब हो जाइये और इसे पाने की कोशिश तेज़ तर कर दीजिये । फ़र्ज़ नमाज़ के साथ साथ सुन्नते मुअक्कदा की आदत बनाइये और जन्नत में दाख़िला पाइये जैसा कि तमाम मुसल्मानों की प्यारी अम्मीजान, हज़रते उम्मे हबीबा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जो शख़्स दिन रात में बारह रकअतें पढ़ेगा उस के लिये जन्नत में एक घर बना दिया जाएगा, चार रकअत नमाज़ ज़ोहर से पहले और दो रकअत ज़ोहर के बा'द और दो रकअत मग़रिब के बा'द और दो रकअत

इशा के बा'द और दो रक्अत नमाजे फ़ज़्र से पहले हैं (कुल बारह रक्अतें सुन्ते मुअक्कदा हैं) ।
(त्रुडुी, 1/424, हदुीथ: 415)

एक हदुीसे पाक में है : जिस ने ज़ोहर से पहले चार और बा'द में चार पर मुहाफ़ज़त (या'नी पाबन्दी इख़्तियार) की, अल्लाह पाक उस पर आग ह़राम फ़रमा देगा ।
(त्रुडुी, 1/435, हदुीथ: 428)

हज़रते अल्लामा तहतावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : ऐसा शख़्स बिल्कुल ही आग में दाख़िल न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और जो उस पर मुतालबात हैं अल्लाह पाक उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा या येह मतलब है कि उसे ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो । (284/1, الدر المختار, حاشية الطحاوی علی الدر المختار)
अल्लामा शामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : उस के लिये खुश ख़बरी है कि सआदत पर उस का ख़ातिमा होगा और वोह दोज़ख़ में न जाएगा । (547/2, الدر المختار)

﴿7﴾ नमाजे तहज्जुद

हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि जब नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मदीने में तशरीफ़ लाए तो मैं ने सब से पहले जो हदुीसे पाक नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुनी वोह येह थी कि ऐ लोगो ! तुम सलाम को फैलाओ, खाना खिलाओ, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करो और रातों को जब सब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ो । तुम ऐसा करोगे तो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।
(त्रुडुी, 4/219, हदुीथ: 2493)

नमाजे तहज्जुद की बरकत से बख़्शिश

सिल्सिलए अ़ालिया कादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के ग्यारहवें पीरो मुर्शिद हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को इन्तिक़ाल शरीफ़ के बा'द किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : ऐ अबुल कासिम (येह आप की कुन्यत थी) ! बा'दे

वफ़ात आप के साथ क्या मुआमला हुआ ? फ़रमाया : हमें सिर्फ़ उन छोटी छोटी रकअतों ने फ़ाएदा दिया जो हम सहर के वक़्त अदा किया करते थे ।

(طیحة الاولیاء، 10/276، رقم: 15220)

﴿8﴾ नमाज़े तहिय्यतुल वुजू

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नमाज़े फ़ज़्र के वक़्त हज़रते बिलाल रَضِيَ اللهُ عَنْهُ से फ़रमाया कि ऐ बिलाल ! तुम ने इस्लाम में सब से ज़ियादा उम्मीद वाला जो अमल किया है उस को मुझ से बयान करो इस लिये कि मैं ने जन्नत में तुम्हारे चलने की आवाज़ अपने आगे सुनी है । तो हज़रते बिलाल رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने अर्ज़ की : मेरा सब से ज़ियादा उम्मीद वाला अमल येही है कि मैं दिन या रात की किसी घड़ी में जब भी वुजू करता हूँ तो मेरे मुक़द्दर में जो नमाज़ लिखी हुई है उस को उस वुजू से पढ़ लेता हूँ ।

(بخاری، 1/390، حدیث: 1149)

मुफ़ती अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ लिखते हैं : हज़रते बिलाल रَضِيَ اللهُ عَنْهُ का जन्नत में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के आगे आगे चलना येह कोई बे अदबी की बात नहीं । बादशाह के कुछ ख़ादिम बादशाह के पीछे पीछे और कुछ ख़ादिम मसलन नक़ीब और चोबदार आगे आगे चला करते हैं और येह दोनों बादशाह के बा अदब ख़ादिम ही हुवा करते हैं । इस हदीस से हज़रते बिलाल رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के बुलन्द दरजे का पता चलता है कि वोह जन्नत में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नक़ीब बन कर हुज़ूर के आगे आगे हुज़ूर की आमद आमद का ए'लान करते हुए चलेंगे और हदीस से ज़ाहिर होता है कि येह बुलन्द रुत्बा इन को “तहिय्यतुल वुजू” की बदौलत मिला है ।

(बिहिश्त की कुन्जियां, स. 77)

मदनी फूल : वुजू के बा'द आ'ज़ा खुश्क होने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है ।

﴿9﴾ ज़कात

प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में गाउं में रहने वाले एक सहाबी हाज़िर हुए और अर्ज़ की : किसी ऐसे अमल पर मेरी रहनुमाई करें कि मैं जब वोह अमल कर लूं तो जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अल्लाह पाक की इबादत करो, उस के साथ किसी को शरीक मत ठहराओ, फ़र्ज़ नमाज़ को काइम करो, ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। तो उन्होंने ने येह सुन कर अर्ज़ की : उस ज़ात की क़सम है जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है कि मैं इस से ज़ियादा नहीं करूंगा। फिर जब वोह पीठ फेर कर चल दिये तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि जिसे येह पसन्द हो कि वोह किसी जन्नती आदमी को देखे तो वोह इस आदमी को देख ले।

(بخاری، 1/472، حدیث: 1397)

﴿10﴾ रोज़ा

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस को “बाबुर्रय्यान” कहा जाता है। उस में से क़ियामत के दिन रोज़ादार (जन्नत में) दाख़िल होंगे, रोज़ादारों के सिवा कोई भी उस दरवाज़े से (जन्नत में) दाख़िल नहीं होगा। कहा जाएगा : रोज़ादार कहां हैं ? फिर वोह खड़े होंगे और उन के इलावा कोई भी उस में से दाख़िल नहीं होगा। जब येह लोग दाख़िल हो जाएंगे तो येह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा।

(بخاری، 1/625، حدیث: 1896)

﴿11﴾ हज़

सहाबिये रसूल हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : एक उम्रह दूसरे उम्रे तक इन दोनों के दरमियान के

गुनाहों का कफ़ारा है और हज्जे मबरूर की जन्नत के सिवा कोई जज़ा ही नहीं।

(بخاری، 1/586، حدیث: 1773)

﴿12﴾ दुनिया में रहते हुए अपना जन्नती मक़ाम देखने का वज़ीफ़ा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर रोज़ाना दुरूदे पाक पढ़ते रहिये, अगर थोड़ी सी तवज्जोह कर के और वक़्त निकाल कर रोज़ाना एक हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ लिया जाए तो ऐसे खुश नसीब पर कैसा करम होता है पढ़िये : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।

(الترغیب فی فضائل الاعمال لابن شاین، ص 14، حدیث: 19)

हर वक़्त जहां से कि उन्हें देख सकूं मैं जन्नत में मुझे ऐसी जगह प्यारे खुदा दे

(वसाइले बख़्शाश, स. 120)

जन्नत में औरतों को क्या मिलेगा ?

जन्नत का बयान पढ़ या सुन कर उमूमन औरतों को ख़याल आता है कि औरतों को जन्नत में क्या मिलेगा ? या ऐसी ख़वातीन जो शादी से पहले ही फ़ौत हो गई वोह जन्नत में जाने की सूरत में किस तरह रहेंगी तो इस बारे में तफ़सील येह है :

﴿1﴾ औरतों को जन्नत में उन के वोह शौहर मिलेंगे दुनिया में वोह जिन के निकाह में थी बशर्ते कि शौहर भी जन्नती हों।

﴿2﴾ अगर किसी औरत का शौहर जन्नत में न जा सका तो वोह किसी और जन्नती मर्द के निकाह में दे दी जाएगी। इसी तरह जो औरतें कुंवारी फ़ौत हुई वोह भी जन्नत में किसी मर्द की जौजियत में चली जाएंगी।

इस के इलावा जन्नत की ने'मतेँ मसलन महल्लात, लिबास, गिजाएं और खुशबूयात वगैरा मर्द व औरत में मुशतरक हैं।

(फ़तावा अहले सुन्नत, सिल्सिला नम्बर 7, स. 24)

❸ अगर कोई औरत यके बा'द दीगरे एक से ज़ियादा मर्दों के निकाह में आई तो इस में दो क़ौल हैं : एक क़ौल के मुताबिक़ जिस के निकाह में सब से आख़िर में थी जन्नत में उसी के साथ होगी जैसा कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अज़ीम है : औरत जन्नत में अपने उस शौहर के निकाह में दी जाएगी जो दुनिया में उस का सब से आख़िरी शौहर था। (مسند الشافعي، 2/359، حديث: 1496)

दूसरा क़ौल यह है कि जिस का अख़्लाक़ ज़ियादा अच्छा होगा उसे मिलेगी जैसा कि तमाम मुसलमानों की प्यारी अम्मीजान, हज़रते बीबी उम्मे सलमा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ने अर्ज़ की : **يا رسوللّلاह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ !** बा'ज औरतें दुनिया में दो, तीन या चार शौहरों से (यके बा'द दीगरे) शादी करती हैं फिर मरने के बा'द वोह जन्नत में इकठ्ठे हों तो वोह औरत किस शौहर के लिये होगी ? इर्शाद फ़रमाया : उसे इख़्तियार दिया जाएगा और जिस ख़ावन्द का अख़्लाक़ दुनिया में सब से अच्छा होगा वोह उसे इख़्तियार करेगी। (مجموع كبير، 23/368، حديث: 870)

इन दोनों अहादीस व अक्वाल में टकराव नहीं जैसा कि हज़रते इमाम अहमद बिन हज़र मक्की शाफ़ेई رَحِمَهُ اللهُ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जिस औरत ने एक के बा'द एक कर के कई निकाह किये हों और हर शौहर ने उस को त़लाक़ दे दी हो मगर आख़िरी ख़ावन्द ने उसे त़लाक़ न दी हो और वोह इस के निकाह में फ़ौत हुई तो इस सूरत में वोह जन्नत में आख़िरी ख़ावन्द के निकाह में होगी जैसा कि पहली हदीस में है। दूसरी सूरत यह है कि उस ने कई निकाह किये, हर शौहर ने उस को त़लाक़ दे दी हो और जब वोह फ़ौत हुई तो किसी के निकाह में न थी तो सिर्फ़ इसी

हालत में उसे इख़्तियार दिया जाएगा और जिस खावन्द का अख़्लाक दुनिया में सब से अच्छा होगा वोह उसे इख़्तियार करेगी। (फ़ावौ' हदीथी, स 70 माखुदा)

दुनिया में जन्नत से आई हुई 18 चीज़ें

﴿1﴾ हमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

(بخاری، 1/402، حدیث: 1195)

﴿2 تا 5﴾ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि चार बरकत वाली चीज़ें अल्लाह पाक ने आस्मान से नाज़िल फ़रमाई हैं : लोहा, आग, पानी, नमक।

(تفسیر صاوی، پ 27، الحدید: 25، 6/2112 ملتقطاً)

चार जन्नती पहाड़ और नहरें

﴿6 تا 13﴾ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : चार नहरें जन्नत की नहरों में से हैं : नील, फुरात, सैहान और जैहान और चार पहाड़ जन्नत के पहाड़ों में से हैं उहुद, तूर, लुबनान और वरि़क़ान।

(الهدورالسافرة، ص 529)

﴿14 تا 17﴾ जब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो हज़रे अस्वद, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा, लोहा और हर किस्म के बीज जन्नत से साथ लाए थे।

(تفسیر صاوی، پ 27، الحدید: 25، 6/2112)

﴿18﴾ मे'राज की सुवारी बुराक जन्नत से आई थी।

(میر آتول مناجیہ، 8/137 ماخوؤن)

जिब्रिले अमीन बुराक लिये जन्नत से ज़मीं पर आ पहुंचे

बारात फिरिशतों की आई मे'राज को दूल्हा जाते हैं

(वसाइले बख़्शाश, स. 287)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अगले हफ्ते का रिसाला

